

गंगा में प्रदूषण का स्तर तेजी से हो रहा कम

मनीष तिवारी • नई दिल्ली

गंगा में डाल्फिन की संख्या बढ़ रही है और प्रदूषण का स्तर तेजी से कम हो रहा है। यह दावा केंद्र सरकार ने नमामि गंगे अभियान की समीक्षा के बाद किया है। जलशक्ति मंत्रालय ने हाल में राज्यों के अधिकारियों के साथ बैठक में यह जानकारी दी कि गंगा को साफ-स्वच्छ बनाने के लिए चल रहे अभियान के सार्थक नतीजे सामने आने लगे हैं। गंगा डाल्फिन की संख्या बढ़कर चार हजार से अधिक हो गई है। केंद्र सरकार ने इसके साथ ही प्रदूषण की निगरानी के लिए बनाए गए प्लेटफार्म प्रयाग की सफलता का दावा करते हुए कहा है कि उसने रियल टाइम मॉनिटरिंग का प्रभावी सिस्टम बना लिया है।

सूत्रों के अनुसार, केंद्र ने अपने प्रजेंटेशन में बताया है कि गंगा के प्रदूषण को आंकने के लिए जो पांच स्तर तय किए गए हैं। उनके अनुसार



- केंद्र सरकार ने नमामि गंगे अभियान की समीक्षा के बाद किया दावा
- चार राज्यों में अब कोई खंड जैव विविधता के लिए चिंताजनक स्तर पर नहीं

अब उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार और बंगाल का कोई भी हिस्सा सबसे गंभीर प्रदूषण की पहली चार श्रेणियों में नहीं है। इसका मतलब है कि इन राज्यों में गंगा का प्रदूषण पांचवीं श्रेणी का है, जो सबसे कम गंभीर और स्वीकार्य सीमाओं के भीतर है। इसमें भी उत्तराखंड में हरिद्वार से सुल्तानपुर का स्ट्रेच अब साफ की श्रेणी में है। दूसरे अर्थों में केंद्र सरकार ने कहा है कि गंगा के लगभग पूरे स्ट्रेच में घुलित आक्सीजन (डीओ) का औसत स्वीकार करने लायक सीमाओं में है। यानी इस नदी का जल बुनियादी रूप से स्नान करने योग्य है और यह नदी के पूरे इकोसिस्टम के

अनुकूल है। कुछ स्थान अभी भी स्वीकार्य सीमाओं से थोड़ा ऊपर हैं, जैसे फर्रुखाबाद से रायबरेली और मीरजापुर से गाजीपुर। केंद्र सरकार ने नमामि गंगे अभियान के तहत 97 स्थानों पर गंगा में डीओ, बायोकेमिकल आक्सीजन डिमांड (बीओडी) की निगरानी की है। इसके मुताबिक 43 स्थानों पर बीओडी बेहतर हुई है और 32 स्थानों पर घुलित आक्सीजन का स्तर सुधरा है। राज्यों में बचाव और पुनर्वास केंद्रों ने फल देना शुरू कर दिया है। गंगा डाल्फिन, घड़ियाल व कछुओं की संख्या तेजी से बढ़ रही है। सर्वे में चार हजार गंगा डाल्फिन की मौजूदगी नोट की गई है।